मुखपृष्ठ
साहित्यकारों की वेबपत्रिका
साहित्यसुधा
वर्ष: 4, अंक 68, सितम्बर(प्रथम), 2019

हिन्दी साहित्य के स्तम्भ- अमृतलाल नागर

राजेन्द्र वर्मा

प्रेमचंद के पश्चात् हिंदी साहित्य के निर्माण में जिन गद्य शिल्पियों ने वृहत्तर भूमिकाएँ निभायीं, उनमें अमृतलाल नागर का प्रमुख स्थान है। नागरजी का जन्म 17 अगस्त 1916 को गोकुलपुरा, आगरा (उ.प्र.) में हुआ था। यह उनका ननिहाल था। उस समय उनके पिताजी अपने पिता के साथ लखनऊ में रहते थे। सो नागरजी का बचपन लखनऊ में ही बीता। कालीचरण स्कूल से हाई स्कूल करने के बाद उनका दाख़िला क्रिश्चियन कॉलेज में हुआ, पर उनका मन क्लास में न रमा। वे कॉलेज की लाइब्रेरी में ही साहित्यिक पुस्तकें पढ़ते रहते थे। इससे न केवल उनकी बुद्धि का विकास हुआ, बल्कि साहित्यिक समझ भी शीघ्र प्रौढ़ हुई। उन्होंने अपने 55 वर्ष के लेखनकाल में कोई 75 कृतियों की रचना की। आइए, उनकी कुछ कृतियों पर दृष्टिपात करें:

प्रथम कृति- कहानी-संग्रह 'वाटिका'

वर्ष 1935 में ही नागर जी का एक कहानी संग्रह, 'वाटिका' प्रकाशित हुआ. उसकी एक प्रति उन्होंने प्रेमचंद को भेजी. अपने 12 मई 1935 के एक पोस्ट कार्ड में प्रेमचंद ने उन्हें लिखा—

"प्रिय अमृतलाल जी,

वाटिका मिली, धन्यवाद!

यह तो गद्यकाव्य की सी चीज़ें हैं। मैं रियलिस्टिक कहानियाँ चाहता हूँ जिनका आधार जीवन पर

हो, जिनसे जीवन पर कुछ प्रकाश पड़ सके। मैंने वाटिका के दो-चार फूल सूंघे. अच्छी खुशबू है।

आलोचना करूँगा.....!

शुभाकांक्षी- प्रेमचंद"

उनका दूसरा कहानी संग्रह, 'अवशेष' 1938 में छपा, जिसमें 'शकीला की माँ, जंतर-मंतर' तथा बेबी की प्रेम कहानी' जैसी रचनाएँ हैं. इनमें जीवन के प्रति यथार्थपरक दृष्टि का विकास द्रष्टव्य है. आगे, 1941 में प्रकाशित कथा-संग्रह, 'तुलाराम शास्त्री' में 'गद्यकाव्य जैसी चीज' का स्थान कथाकार के सामाजिक सरोकार ने ले लिया। इस विकास यात्रा का श्रेय

नागरजी प्रेमचंद को देते हैं- "प्रेमचंद के इस (उपर्युक्त) वाक्य ने एक तरह से मेरी जन्मपत्री ही बदल दी. वे चिंतन और लेखन में मोड़ लाने का एक कारण बने!"

उन्होंने 75 कहानियाँ लिखी, जो 'एक दिल हज़ार अफ़साने' नामक पुस्तक में संगृहीत हैं. कहानी-कला की सिद्धहस्तता में वे शरतचंद्र, प्रेमचंद और टॉलस्टॉय की सीखें उद्धृत करते हैं- शरद बाबू ने कहा, "जो लिखो, अनुभव से लिखो"; प्रेमचंद द्वारा रियलिस्टिक कहानी की मांग; और टॉलस्टॉय का यह वाक्य- "पहले यह मानना बंद कर दो कि कला महज़ आनंद देने का साधन है, इसे इंसानी जीवन की एक शर्त मानो."

प्रथम उपन्यास- 'महाकाल' और रेखाचित्र- 'सेठ बांकेमल'

1940 से 47 की अवधि में उन्होंने हिंदी साहित्य को दो महत्वपूर्ण कृतियाँ दीं, एक- उपन्यास, 'महाकाल' और दूसरी- परिहासपूर्ण रेखाचित्र, 'सेठ बांकेमल'। 'महाकाल' दो अर्थों में महत्वपूर्ण है- एक, यह नागर जी का पहला उपन्यास है, दूसरे- किसी हिंदी लेखक द्वारा बंगाल की पृष्ठभूमि पर लिखा गया है। यदि खोज की जाए, तो संभवतः यह पहला कार्य ठहरे! उपन्यास 1943 में द्वितीय महायुद्ध के दिनों बंगाल में पड़े अकाल पर आधारित है. जमाखोर व्यापारियों का लालच ही इस अकाल का कारण था।

'सेठ बांकेमल' हास्य-व्यंग्य का टोन लिए हुए रेखाचित्र है। आगरे की बोली में लिखी गयी इस हास्य-व्यंग्य कृति में सेठ बांकेमल नाम के एक ऐसे विनोदी और हाजिरजवाब चरित्र को उतारा गया है, जिसके पास अपार जीवनानुभव है और चीजों को देखने की गहरी-पैनी दृष्टि है।

बहुचर्चित उपन्यास- बूँद और समुद्र

1956 में प्रकाशित, 'बूँद और समुद्र' 600 पृष्ठीय वृहत्काय उपन्यास है जिसका मुख्य क्षेत्र लखनऊ का चौक मोहल्ला और उसकी गलियाँ हैं। सभी पात्र इन गलियों से बखूबी जुड़े हैं। कथानक में अनेक कथा-सूत्रों को पिरोया गया है। बूँद व्यक्ति और समुद्र समाज का प्रतीक है। उपन्यास व्यक्ति के महत्त्व को रेखांकित करता है, "हर बूँद का महत्त्व है, क्योंकि वही तो अनन्त सागर है। एक बूँद भी व्यर्थ क्यों जाय? उसका सदुपयोग करो।" सामाजिक असंगति के प्रश्न पर नागर जी एक पात्र के माध्यम से कहते हैं, "बूँद अगर बूँद से शिकायत रखती है, तो वह उससे कहीं अलगाव भी रखती है। तब यह सागर कैसा है जिसमें हर बूँद अलग है? व्यक्ति यदि इतना ही अलग है, तो समाज बँधता क्योंकर है?....आदर्श का यदि महत्त्व है, तो सबके लिए उसका मूल्य समान हो, यह क्योंकर संभव नहीं? बड़ी बूँद हो, छोटी बूँद, नन्हीं बुंदकी ही क्यों न हो, यह छोटी-बड़ाई, नैतिक मानदंड के लिए कोई मूल्य नहीं रखती. वह मात्र यही देखता है कि बूँद में, प्रत्येक अणु में, सत्य के लिए निष्ठा कितनी है, प्रत्येक अणु इस

निष्ठा को अपनी क्रियाशक्ति से किस हद तक विकसित कर नया आदर्श उपस्थित करने की क्षमता रखता है!"

अमृत और विष

'बूँद और समुद्र' की भाँति, 'अमृत और विष' नागर जी का महत्वपूर्ण उपन्यास है। 1965 में आत्मकथा शैली में लिखित, 1966 में प्रकाशित और 1967 में साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित इस उपन्यास का मुख्य पात्र स्वतंत्रता सेनानी और उपन्यासकार- अरविन्द शंकर है। अरविन्द लेखकीय जीवन जीते हुए आर्थिक संघर्ष से भी जूझते हैं. पारिवारिक स्तर पर अरविन्द का जीवन उलझाव-भरा है। उपन्यास में मानसिक ऊहापोह, आर्थिक संघर्ष और नयी व पुरानी पीढ़ी का द्वंद्व का मार्मिक चित्रण है. उपन्यास में प्रेमचंद के आदर्शोन्मुख यथार्थवाद की अपेक्षा यथार्थोन्मुख आदर्श प्रस्तुत किया गया है।

एकदा नैमिषारण्य

इस उपन्यास में अनेक उपकथाओं के माध्यम से भारत के पौराणिक और ऐतिहासिक काल को एक अनूठे ढंग से समेटा गया है। भारत की सम्पूर्ण सांस्कृतिक विकास की गाथा को प्रस्तुत करते उपन्यास के कई निष्कर्ष बिंदु हैं, जैसे- नैमिष में संतों के एकत्रित हो सांस्कृतिक चेतना का जागरण; नैमिष आन्दोलन का वर्तमान भारतीय या हिन्दू संस्कृति के निर्माण में प्रमुख योगदान; वेद, पुनर्जन्म, कर्मकांडवाद, उपासनावाद, ज्ञानमार्ग आदि का समन्वय नैमिषारण्य में होना; और सबसे महत्वपूर्ण- देश की दो मुख्य धाराओं- ब्राह्मण और श्रमण- को नैमिष आन्दोलन से समन्वित होना!

मानस का हंस *और* खंजन नयन

ये दोनों उपन्यास क्रमशः महाकवि द्वय तुलसीदास एवं सूरदास जी के जीवनी पर आधारित हैं. इनकी रचना मध्यकालीन भारत के वास्तविक चरित्रों को लेकर की गयी है. यह कार्य तब और दुस्साध्य हो जाता है जब इन दोनों महाकवियों की कोई आधिकरिक जानकारी उपलब्ध न हो. कतिपय तथ्यों को छोड़ हमारी जानकारी का स्रोत मात्र किंवदंतियों और जनश्रुतियों पर ही आधारित है. लेकिन नागर जी ने यह दुष्कर और श्रमसाध्य कार्य इन महाकवियों के प्रति अपनी अगाध निष्ठा और भावना के बल पर संपन्न कर दिखाया है.

नाच्यौ बहुत गोपाल

यह नागर जी का सर्वाधिक यथार्थवादी उपन्यास है जिसमें मेहतर समाज के साथ-साथ नारी-शोषण की द्विस्तरीय मार्मिक गाथा है- एक, नारी की सामान्य शोषण-कथा और दूसरे, एक

ब्राह्मणी के मेहतरानी बनने पर उसके अपमान की कहानी! उपन्यास की रचना से इन पंक्तियों के लेखक का भी जुड़ाव रहा है। उसे पांडुलिपि लिखने का अवसर प्राप्त हुआ। उपन्यास में मेहतर जाति के ऐतिहासिक पहलुओं पर ख़ासी चर्चा है और कतिपय समाजशास्त्रीय निष्कर्ष भी प्रस्तुत किये गए हैं। यह समाजशास्त्रियों के अध्येताओं के लिए चिंतन का विषय तो है ही, जागरूक पाठकों को भी वैचारिकता के सागर में उतरने पर विवश करता है।

बिखरे तिनके *और* अग्निगर्भा

ये दोनों उपन्यास क्रमशः 1982 और 1983 में लिखे गये हैं. 'बिखरे तिनके' में सामाजिक भ्रष्टाचार और उसके सहारे सामाजिक उन्नति की प्रवृत्ति पर प्रहार है. निम्नवर्ग की नयी पीढ़ी जल्द-से-जल्द मध्यमवर्ग हो जाना चाहता है और मध्यमवर्ग, उच्चवर्ग! इस प्रक्रिया में जातिगत समीकरण, आर्थिक भ्रष्टाचार को उन्नति की सीढ़ी बनाये जाने की प्रवृत्ति, राजनीति और अपराध में साठ-गाँठ आदि का विशद चित्रण उपन्यास में है। 'अग्निगर्भा' में आधुनिक नारी, जो उच्च शिक्षित होने के बावजूद दहेज के दानव के चंगुल में है, की दारुण गाथा है। यहाँ पुरुष बहुल समाज की चालाकियां स्त्री की गुणवत्ता पर हावी हैं। नायिका एक कॉलेज में लेक्चरर है. पति हर माह पत्नी का वेतन दहेज की किश्त के रूप में छीनता रहता है, क्योंकि उसने बिना दहेज के विवाह करके निर्धन ससुर पर कृपा जो की थी! आर्थिक शोषण की यह चक्की तब तक चलती रहती है, जब तक उसकी हत्या नहीं हो जाती है।

करवट *और* पीढ़ियाँ

ये उपन्यास नागर जी की रचना-यात्रा के अंतिम पड़ाव हैं. दोनों ही उपन्यासों में आज़ादी के पहले और आज़ादी के बाद देश के राजनीतिक, सामाजिक और सामाजिक-मनोवैज्ञानिक परिवर्तनों का विशद अध्ययन है, पर यह अध्ययन कोरा ऐतिहासिक वर्णन-भर नहीं, कथारस और इतिहास-रस से परिपूर्ण औपन्यासिक दस्तावेज़ है। 'करवट' 1854 से 1902 तक के समय को समेटता है, जबकि 'पीढ़ियाँ' 1905 से लेकर 1986 तक के काल-खंड को, यद्यपि उसमें 1942 के आन्दोलन को प्रमुखता से उभारा गया है.

शतरंज के मोहरे *और* सुहाग के नुपुर

'शतरंज के मोहरे' नागर जी का पूर्णरूपेण ऐतिहासिक उपन्यास है. यह अवध की नवाबी और ईस्ट इंडिया कम्पनी की नीतियों और १८५७ के ग़दर की पृष्ठभूमि का मार्मिक चित्रण है। अवध के नवाब- गाजीउद्दीन हैदर से लेकर नसीरुद्दीन हैदर के शासन को इस प्रकार समेटा गया है कि समाजशास्त्रीय चेतना और इतिहास-बोध, दोनों बचे रहें। 'सुहाग के नूपुर' तमिल महाकाव्य 'शिलप्पदिकारम्' की कथावस्तु पर आधारित उपन्यास है। उपन्यास में दो नारी

चरित्र हैं- कुलवधू कन्नगी और नगरवधू माधवी. इन दोनों के बीच है- उद्दाम भोगेच्छा और छलना से ग्रसित धनकुबेर कोवलन. इन पात्रों के अतिरिक्त एक और नारी पात्र है- चेलम्मा, जो देहार्पण के बावजूद मुक्तावस्था को प्राप्त है। इन चरित्रों के माध्यम से चोल राजाओं की बहुश्रुत राज्य-व्यवस्था और उसकी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से साक्षात कराता उपन्यास हमें जीवन के अन्तर्द्वन्द्वों से बाहर निकाल उदात्तता को प्रेरित करता है।

ग़दर के फूल, ये कोठे वालियाँ *और* टुकड़े-टुकड़े दास्तान

'ग़दर के फूल' अट्ठारह सौ सत्तावनी क्रांति-संबंधी स्मृतियों और किंवदंतियों का प्रमाणिक दस्तावेज़ है. अवध क्षेत्र में घूम-घूम कर नागरजी ने जन-स्मृतियों को पुस्तक में समेटा है। पुस्तक में उ.प्र.के अवध क्षेत्र के दस जनपदों— बाराबंकी, फैजाबाद, सुल्तानपुर, गोंडा, बहराइच, सीतापुर, रायबरेली, हरदोई, उन्नाव और लखनऊ- में बिखरे ग़दर के फूलों के पुस्तक में एकत्रित कर आस्था से सजाया गया है। परिशिष्ट के रूप में 'बेगमात-ए-अवध के खुतूत' पुस्तक की अतिरिक्त उपलब्धि है।

'ये कोठेवालियाँ' वेश्याओं से भेंट-वार्ताओं का संग्रह है जिसमें चौक (लखनऊ) की गलियों में तत्समय वेश्यालयों में जाकर वेश्याओं से मिलकर उनकी कहानियों को जान-समझकर कागज़ पर उतारा गया है। पुस्तक में जहाँ वेश्याओं से प्राप्त उनकी भुक्तभोगी रससिक्त त्रासद कहानियाँ हैं, वहीं वेश्या, गणिका आदि के ऐतिहासिक पक्ष को भी खंगाला गया है। कौटिल्य के अर्थशास्त्र द्वारा मौर्यकाल और उसके आस-पास युग में राजदरबार और संपन्न प्रजाजनों के लिए गणिका की अनिवार्यता का पता चलता है। पितृसत्तात्मक सभ्यता के निर्मम सिद्धांत की भी खबर लेती यह पुस्तक गहन खोज और सामाजिक विश्लेषण का दस्तावेज़ है।

'टुकड़े-टुकड़े दास्तान' में नागर जी के 39 आत्मसंस्मरणात्मक निबन्ध संगृहीत हैं. इनमें से- 'मेरा बचपन, मेरे आदिगुरू, मेरे पथ प्रदर्शक, मैं लेखक कैसे बना, जब मैंने पहली कहानी लिखी, मैं क्यों लिखता हूँ, मैंने 'बूँद और समुद्र' कैसे लिखा, 'खंजन नयन' की रचना, एकदा नामिषारण्ये' आदि ऐसे निबन्ध हैं, जो उनके बाल्यजीवन एवं पारिवारिक परिचय प्राप्त करने और महत्वपूर्ण कृतियों की रचना-प्रक्रिया जानने का सहज माध्यम है।

नागर जी का रचना-संसार विस्तृत और वैविध्यपूर्ण है. उसमें ऐतिहासिक, सामाजिक और समाजशास्त्रीय अध्ययन-विश्लेषण और विशिष्ट अर्थों से परिपूर्ण है. उसमें यथार्थ और कला, दोनों का वह रूप हमें दिखाई देता है जिसका अवगाहन करते-करते हम एक नये अर्थबोध से भर उठते हैं। असंगतियों-विसंगतियों से उपजी निराशा की धुँध छँटने लगती है और हम स्वयं को समुद्र की उस 'बूँद' की भांति अनुभूत करने लगते हैं, जिसमें समुद्र समाया हुआ है। जो साहित्य हमें जीवन की सार्थकता का बोध करा सके, वही मानव के कल्याण का हेतु बनता है और कालजयी कहलाता है। नागरजी का साहित्य निःसंदेह इस कोटि का है। उनकी स्मृति को नमन!